By
Rahul Kumar Jha
Dept.of Political Science

Lecture-1

Topic - Nation-building and its problems

Class - XII, Part 'A', Unit-I

Subject - Political Science

Date - 14 May, 2020

By Rahul Kumar Jha.

राष्ट्र निर्माण और इसकी समस्याएँ !-

भारत 15 अगस्त, 1947 को आजाद हुआ अर्थात इस दिन भारत को विदेशी आधिपत्य से मुक्ति मिली। परंतु विदेशी आधिपत्य से मुक्ति मात्र से ही एक देश का सर्वांगीण विकास नहीं हो सकता, इसके लिए जरूरी है कि सभी लोगों का सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक व राजनीतिक दृष्टि से स्थायी एकीकरण किया जाए। तीसरी दुनिया के बहुत से देश तो भारत के साथ स्वतंत्र तो हुए परंतु इस समस्या का समाधान न कर सके जिनके चलते उनके टुकड़े हो गए। भारत तीसरी दुनिया का सर्वाधिक विकासशील देश माना जाता है जहाँ राष्ट्र-निर्माण की क्रिया में उल्लेखनीय सफलता मिल चुकी है।

राष्ट्र निर्माण और राष्ट्रीय एकीकरण में अंतर :-

आमतौर पर राष्ट्रीय एकीकरण को राष्ट्र-निर्माण का पर्याय समझा जाता है परन्तु दोनों में अंतर है। अपना स्वतंत्र राज्य बनाने से पूर्व भी लोगों का राष्ट्रीय एकीकरण हो सकता है जैसे यहूदियों को देखा जा सकता है। 1948 में इजराइल की स्थापना से पूर्व वे एक संगठित राष्ट्र बन चुके थे। वे फिलिस्तीन में रहते थे किन्तु उनकी विशाल संख्या यूरोप व अमेरिका के देशों में वास करती थी। अपना राज्य बनते ही लाखों यहूदियों ने इजराइल में आकर अपना स्थायी आवास कर लिया। कुछ ही समय में उन्होंने अपना राष्ट्र निर्माण अर्थात विकास भी कर लिया।

इस प्रकार राष्ट्रीय एकीकरण की अवधारणा भावात्मक होता है इसमें सभी लोग एक-दूसरे से मजबूत व अदृश्य-धागों से जुड़ जाते हैं, उनकी एकता अटूट हो जाती है तथा उस राष्ट्र का हर एक व्यक्ति गर्वपूर्वक कहता है कि वह अपने देश की

खातिर प्राण न्यौछावर कर सकता है।

दूसरी तरफ राष्ट्र-निर्माण की अवधारणा यह बताता है कि राज्य का संविधान सर्वमान्य हो, देश का राजनीतिक एकीकरण हो जाए, ताकि किसी क्षेत्र में देशद्रोही न पनप सके, सभी को सामाजिक व आर्थिक न्याय के वरदान सुनिश्चित हो, शिक्षा प्रणाली व कानून व्यवस्था राष्ट्र की आवश्यकता और व आकांक्षाओं पर आधारित हो तथा राज्य ऐसी विदेश नीति अपनाए जो उसके राष्ट्रीय हित को सुरक्षित व संवर्धित करें।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि जिस प्रकार ईंट, पत्थर, लकड़ी, लोहे, सीमेण्ट आदि से कोई भवन बनाया जाता है, उसी प्रकार राष्ट्र-निर्माण होता है जिसके पीछे उसके भवन निर्माताओं की इच्छा शक्ति या उनका दृढ़ संकल्प देखा जा सकता है। निर्माताओं की योजनाएँ भिन्न प्रकार की हो सकती है, इसीलिए विश्व में राष्ट्र-राज्यों के विविध प्रतिमान को देखा जा सकता है।